6.95

(ख) Method acting / यथापद्धति अभिनय
स्टेनिस्लावस्की

पश्चिम के रंगजगत के अतिनाटकीय अभिनय के स्थान पर यथार्थनिष्ठ प्रदर्शन को एक सुव्यवस्थित पद्धति का रूप देकर प्रतिष्ठित करने का श्रेय रूस के विश्वविख्यात शौकर्मी और कालजयी नाट्याचार्य कॉन्स्टेंटिन स्टेनिस्लावस्की को है। स्टेनिस्लावस्की अभिनय को अनुकरण नहीं रचनाशील मानते थे। बड़े लम्बे समय तक रंगकर्म में संलग्न रहने के अनन्तर उनके मन में यह प्रश्न उठा कि रचना का शील अपने आप तो यदाकदा ही जागता है लेकिन वह व्यक्ति, जो अभिनय को व्यवसाय बना लेता है अपनी रचनाशीलता को कैसे जगाए? इस संबंध में उन्होंने स्वयं अपने रंगकर्म का आत्मविश्लेषण किया और फिर अनेक वरिष्ठ रंगकर्मियों की कार्यप्रणाली का अनुशीलन: इसके आधार पर उन्होंने अभिनय में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिए एक सुनियोजित पाठ्यक्रम बनाया। यह पाठ्यक्रम हमें अपनी रचनाशीलता को अपनी इच्छा से जगाने की रीतिनीति बताता है। इसी रीति को नाट्यजगत में स्टेनिस० की अभिनय पद्धति कहा गया है और इसके अनुसार प्रदर्शन को यथातथ्य पद्धति अभिनय की संज्ञा दी गई है। यथापद्धति अभिनय से इसप्रकार अभिप्राय स्टेनिस्लावस्की की पद्धति के अनुरूप अभिनय से है। अंग्रेजी में इस यथापद्धति अभिनय को Method acting कहा गया है।

स्टेनिस्लावस्की ने जिस यथार्थनिष्ठ अभिनय पद्धति की प्रतिष्ठा की थी उसकी शुरुआत विक्टर ह्यूगो ने फ्रांस की राज्यक्रांति के संदर्भ में की थी। फ्रांस की इस क्रांति ने राजतंत्र के स्थान पर प्रजातंत्रात्मक शासन प्रणाली की व्यवस्था की थी। इसका परिणाम यह हुआ था कि रंगमंच पर वरिष्ठ राजपुरुषों के तड़क भड़क भरे बहुरंगीय जीवन के स्थान पर सामान्य व्यक्तियों के जीवन की

सुख दुःख भरी कहानी प्रस्तुत की जाने लगी थी। विक्टर ह्यूगो ने अपने उपन्यास 'लॉ मिजरेबुल्स' में सामान्य व्यक्ति के दुःख-दर्द का आख्यान महाकाव्यात्मक विन्यास में लिखा था। ह्यूगो ने इसी चेतना को लेकर कुछ नाटकीय रचनाएं भी लिखी थीं। मामूली आदमी के जीवन को यथार्थता के साथ प्रदर्शन के किसी कार्य को M.L. Zola ने प्रकृतिवाद का नाम देकर आगे बढ़ाया था और उनके उपन्यास तथा नाटकों की रचना की थी। ड्यूमाफिल्स के नाटकों में भी हम साधारण आदमी के जीवन की कठिनाइयों एवं समस्याओं का प्रदर्शन देखते हैं। इब्सन, चेखव, स्ट्रिण्डबर्ग, हाफमैन आदि ने इसी जनवादी दृष्टिकोण की नाटकीय रचनाएं प्रस्तुत की थीं। स्टेनिसलावस्की ने इन्हीं प्रकृतिवादी यथार्थनिष्ठ और जनसाधारण के जीवन का चित्रण करने वाली नाटकीय रचनाओं को लेकर अपनी यथार्थनिष्ठ अभिनय पद्धति का विवेचन किया था। इस संदर्भ में स्टेनिसलावस्की के अनेक ग्रंथ उल्लेखनीय हैं यथा उसकी आत्मकथा "My life in Art" "An actor prepares foundation of character", "Creating a role" आदि आज संसार में जहाँ कहीं भी अभिनय पढ़ाया जाता है यही ग्रंथ सुनिश्चित रूप से पाठ्यक्रम में होते हैं।

स्टेनिस० ने अभिनय को मूलतः रचनाशील कला कहा यह रचनाशीलता अपने आप तो कभी-2 ही जागती है लेकिन अभिनेता को तो उसे अपनी इच्छा से समय-2 पर जगाना पड़ता है। उसे अपनी इच्छा से कैसे जगाया जाए इस संदर्भ में स्टेनिसलावस्की ने लिखा है कि आज के युग में जो कुशल एवं सफल अभिनेता बनना चाहता है उसके लिए यह आवश्यक है कि वह किसी रंगसंस्थान में व्यवस्थित रूप से शिक्षा ग्रहण करे। तथा किसी को अभिनय अर्थात् भाव विशेष को कैसे व्यक्त किया जाए यह पढ़ाया नहीं जा सकता, केवल यही सिखाया जा सकता है कि वह अपनी रचनाशीलता को अपेक्षा के अनुसार कैसे जगाए? उसके मनोजगत में जो रचनाशीलता निश्चेष्ट पड़ी हुई है उसे कैसे उठाए और चैतन्य बनाए? इसके लिए प्रशिक्षण जरूरी है।

Scanned with CamScanner